भाकृअनुप
ICAR

गोवंशीय पशुओं में थिलेरिया रोग

IVRI
2013

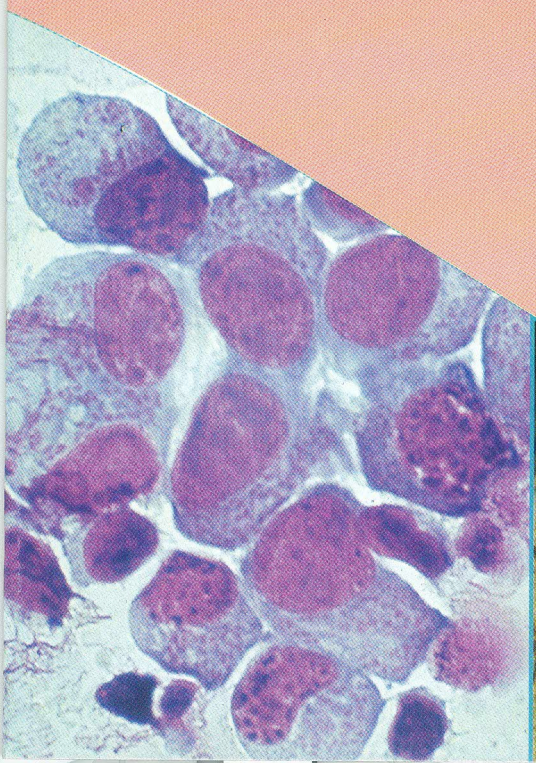

गोवंशीय पशुओं में थिलेरिया रोग

भारत जैसे गर्म जलवायु वाले देश में, जहाँ विश्व की अधिकतम पशुओं की संख्या पाई जाती है, गर्मी के कारण यहाँ पशुओं में किलनियों का प्रकोप अधिक होता है। किलनियाँ न केवल पशुओं का खून चूसती हैं और घाव बनाती हैं बल्कि अनेक प्रकार की बीमारियाँ भी फैलाती हैं। किलनियों द्वारा फैलने वाले रोगों में कुछ विषाणु व कीटाणु जनित तथा कुछ सूक्ष्म रक्त परजीवियों से होने वाली बीमारियाँ हैं। थिलेरिओसिस भी एक सूक्ष्म रक्त परजीवी से होने वाली बीमारी है जो कि थिलेरिया एनुलेटा नामक सूक्ष्म रक्त परजीवी से होती है। थिलेरिओसिस मुख्यत: विदेशी तथा संकर नस्ल के गोवंशीय पशुओं में होती है। भारत में यह बीमारी एक विशेष प्रकार की किलनी, हायलोमा एनाटोलिकम के काटने से फैलता है। यह परजीवी लाल एवं एक विशेष प्रकार की श्वेत रक्त कोशिकाओं में पाया जाता है।

संक्रमण

जब किलनियाँ किसी रोग ग्रसित जानवर का खून चूसती हैं तो उसके खून से रोग के परजीवी किलनी के शरीर में आ जाते हैं जहाँ इनका विकास होता है और संख्या बढ जाती है तथा इसके बाद ये परजीवी किलनी की लार ग्रन्थियों में आ जाते हैं। जब ऐसी किलनी फिर से किसी स्वस्थ पशु में रक्त चूसने के लिए काटती है तो उसकी लार से यह रक्त परजीवी उस जानवर के खून में आ जाते हैं और जानवर इस परजीवी के द्वारा होने वाले रोग से ग्रसित हो जाता है।

रोग के लक्षण

कम उम्र के पशु तथा लम्बी यात्रा के बाद थके पशुओं में इस रोग की अधिक सम्भावना रहती है। जब हायलोमा एनाटोलिकम नामक किलनी किसी जानवर को काटती है तो इसके एक सप्ताह में उस जानवर में बीमारी के लक्षण देखाई देने लगते हैं। तीव्र बीमारी में, प्रारम्भ में लगातार तेज बुखार

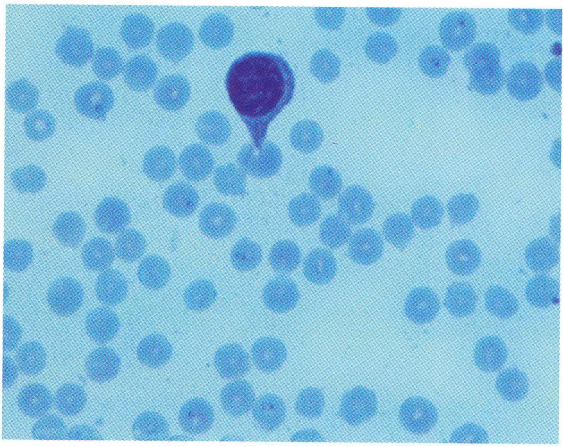

रहता है या फिर चढता उतरता रहता है। अन्य लक्षण जैसे कि आँखों से आँसू आना, आँखों की पुतली में सूजन व रक्तमयता, नाक से स्राव बहना, तेज हृदय गति, प्रिस्कैपुलर लसा ग्रन्थि में सूजन, रक्त अल्पता, दस्त तथा कब्ज व मूत्र का रंग पीला हो जाता है। इस रोग में पशु के फेफडे बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो जाते हैं जिससे श्वांस लेने में कठिनाई होती है। इलाज के अभाव में 2-3 सप्ताह में ही 70 प्रतिशत पशुओं की मृत्यु हो जाती है।

निदान

इस रोग की जाँच के लिए पशुपालन विभाग की नैदानिक प्रयोगशालाओं या फिर भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान के रोग शोध निदान केन्द्र में रक्त की पट्टिका भेजकर करायी जा सकती है।

उपचार

भारतीय बाजार में इस समय केवल बूपारवाक्वोन (ब्यूटालैक्स) नामक दवा इस रोग के उपचार के लिए उपलब्ध है। यह दवा 2.5 मिग्रा प्रति किलोग्राम शरीर के वजन के हिसाब से माँस पेशी में इन्जैक्शन द्वारा दी जाती है। गम्भीर मामलों में 48 घंटे के अन्तराल पर दूसरा इन्जैक्शन दिया जाता है। अन्यथा केवल एक ही इन्जैक्शन इसके उपचार के लिए उपयुक्त है। उपचार और निदान प्रशिक्षित पशु चिकित्सक द्वारा ही कराना उचित रहता है क्योंकि गलत निदान और उपचार के कारण पशु के जीवन को खतरा रहता है।

बचाव व रोकथाम

यह रोग किलनी के काटने से फैलता है इसलिए पशुशाला में साफ-सफाई रखकर तथा किलनी नाशक दवाओं के प्रयोग से किलनियों की संख्या कम करके, इस रोग को फैलने से रोकने में मदद मिलती है। थिलेरिओसिस से पशुओं का बचाव, टीका तथा

निश्चित अन्तराल पर किलनी नाशक दवाओं के उपयोग से किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त नये पशुओं को प्रवेश के समय लगभग 40 दिन तक अलग संगरोध स्थल में रखकर तथा उपचार द्वारा इनकी रोकथाम की जा सकती है। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि संवेदनशील पशु में इस रोग की केवल एक किलनी रोग के परजीवी को संचरित कर उस पशु को रोग ग्रसित कर सकती है। थिलेरिया एनुलेटा से होने वाले थिलेरिओसिस के लिए एटीनुएटेड लि कल्चर टीका रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने के लिए बाजार में उपलब्ध है। भारत में टीका भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान और राष्ट्रीय दुग्ध विकास परिषद (एन.डी.बी) द्वारा विकसित किया गया है। इस टीके को हमेशा अतिहिमीकृत स्थिति में रखा जाता है।

लेखक:

दिनेश चन्द्र, नवनीत कौर, के०पी० सिंह एवं
ए०के० तिवारी

प्रकाशक:

जलवायु समुत्थानशील कृषि पर राष्ट्रीय पहल

एवं

निदेशक, भारतीय पशु-चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर-243 122 (उ.प्र.)
के निमित प्रभारी अधिकारी संचार केन्द्र द्वारा प्रकाशित।

मुद्रक:

बाइट्स एण्ड बाइट्स, बरेली। फोन: 94127 38797